ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 156-157
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

भारतीय चलचित्र (सिनेमा) का उद्भव

मधुलिका सिंह

शोध अध्येत्री– मंचकला एवं संगीत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-11.03.2024, Revised-17.03.2024, Accepted-21.03.2024 E-mail: madhulika008@gmail.com

सारांश: *भारत में थियेटर और सिनेमा को एक सूत्र में पिरोते हुए जिस कलाकार की स्मृति मस्तिष्क पटल पर सर्वप्रथम उभरती है वह रंगमंच और फिल्मों में समान रूप से एकाधिकार रखने वाले उस व्यक्तित्व का स्मरण कराती है, जिसे अभिनय भारतीय सिनेमा का भीष्म पितामह कहा जाता है। मूक फिल्मों के आवरण को भेदकर भारत की प्रथम सवाक् सिनेमा का स्थान अर्जित करने वाली आर्देशिर ईरानी निर्देशित फिल्म 'आलम आरा' (1931) से ही अपने सशक्त अभिनय से पात्र को जीवन्त करने वाले कलाकार पृथ्वीराज कपूर ही थियेटर और सिनेमे के ऐसे प्रथम सूत्र है, जिन्होंने सिनेमाई सन्दर्भ में थियेटर के प्रसंग को सदा प्रासंगिक बनाये रखा।*

कुंजीभूत शब्द– भारतीय चलचित्र, स्वतन्त्र अस्तित्व, एकाधिकार, क्षेत्रीयता, कालखण्ड, स्वतन्त्र आन्दोलन, रंगमंच, थियेटर, सिनेमा।

स्वतन्त्रता पूर्व अखण्ड भारत में तब थियेटर ही सिनेमा का वाहक हुआ करता था। लाहौर, कलकत्ता और मुम्बई उस समयावधि में रंगमंच तथा फिल्मों के त्रिकोण थे। पृथ्वीराज लाहौर से जब कलकत्ता आये तो उनके पास थियेटर ही एक मात्र पूंजी थी जो उन्हें सिनेमा में प्रवेश का द्वार दिखाने वाला माध्यम बना। लाहौर का पंजाबी रंग, कलकत्ता का बँगला ढंग और बम्बई का मराठी संग अपने–अपने उत्सर्ग में स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुए भी कहीं न कहीं क्षेत्रीयता की परिधि में बँधा हुआ था। उस कालखण्ड में स्वतन्त्र आन्दोलन अपने चरम पर था और तब यही रंगमंच, थियेटर तथा सिनेमा उसे गाँव–गाँव, नगर–नगर पहुँचाने का सशक्त माध्यम था। राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा द्रुत गति से सम्पर्क सूत्र बन रही थी। परिणामस्वरूप सिनेमा हिन्दी अपने पाँव पसारते हुए समस्त प्रान्तों की क्षेत्रीयता को समेट कर प्रभावी रूप से मुखर होने लगी थी। हिन्दी सिनेमा का गढ़ लाहौर से कलकत्ता होते हुए अंततः बम्बई (मुम्बई) में स्थापित हो गया। अपने–अपने प्रान्त के थियेटर तो वही रह गये पर उसके स्थापित कलाकार राष्ट्रीय अस्तित्व की अभिलाषा लिए हिन्दी की शरण में आ गए। तब पृथ्वीराज ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो संस्थान के रूप में थियेटर और सिनेमा में समान रूप से सक्रिय एवं प्रभावी रहे।

फ्रांस के एक कल्पनाशील छायाकार जान्सेन ने सन् 1873 ई0 में एक अद्भुत कैमरे का निर्माण किया, जिसे 'फोटोग्राफिक राइफल्स' के नाम से जाना गया। अपने इस अनोखे अविष्कार को जब उन्होंने फ्रांस के 'अकडमी आफ साइंस' में लोगों के सामने प्रदर्शित किया तो देखने वाले इसे देखकर हक्के–बक्के रह गये। जान्सेन के इस प्रयास से सिनेमा के जन्म की दिशा में प्रगति हुई। फ्रांस के मर्सी ने सन् 1888 ई0 को एक ऐसे कैमरे का अविष्कार किया, जिसके द्वारा एक सेकेण्ड में कुल बीस चित्रों का क्रमवार छायांकन किया जा सकता था, लेकिन समस्या यह थी कि उन दिनों फोटो में उपयुक्त होने वाले रीलों और उनके पॉजिटिक्स के किनारों में छिद्र नहीं होने के कारण उन तस्वीरों को एक निश्चित दूरी से शृंखलाबद्ध रूप में, सिनेमा की तरह प्रदर्शित नहीं किया जा सकता था, लेकिन मर्सी की इस समस्या का समाधान सन् 1890 में अपने आप हो गया, जब जार्ज ईस्टमेन द्वारा 'सेल्युलॉयड' का व्यवसायीकरण होना प्रारम्भ हुआ। मर्सी ने इसका फायदा उठाते हुए मानव शरीर के विभिन्न भागों द्वारा होने वाले संचलन के अध्ययन के लिए अपने विशेष रूप से विकसित किए कैमरे द्वारा चलचित्रों का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सिनेमा के जन्म की आधारभूत कल्पना ने मूर्त रूप ले लिया। मर्सी के इस अनोखे प्रयोग से प्रेरणा लेते हुए फ्रांस के तत्कालीन कई छोटे–बड़े छायाकारों ने चलचित्र निर्माण की दिशा में नए–नए प्रयोग करने आरम्भ कर दिये थे। इसी शृंखला में, एक जादूगर द्वारा मंच पर प्रस्तुत किये गये जादुई करतबों का सन् 1893 ई0 में फ्रांस के डेमिनी द्वारा छायांकित कर, लघु फिल्म का निर्माण किया। लोगों ने जब इसे देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। इस तरह सिनेमा अधिक सृजनात्मक रूप लेने लगा था। फ्रांस के ऐसे कई प्रयोगवादी और सृजनात्मक छायाकारों द्वारा सिनेमा का स्वरूप कदम–कदम पर उभरने लगा था, लेकिन मुख्यतः फ्रांस के 'लुईस ल्युमिएरे' को ही सिनेमा के जन्मदाता के रूप में मान्यता मिली है। 'लुईस ल्युमिएरे' एक व्यवसायिक थे और उनकी एक कम्पनी थी जो 'ल्युमिएरे' कम्पनी के नाम से सुप्रसिद्ध थी। लुईस व्यावसायिक होने के साथ–साथ वैज्ञानिक भी थे और नए–नाए अविष्कारों की खोज में निरन्तर प्रयासरत रहते थे। उस दौरान फ्रांस में फिल्म निर्माण के नए और उभरते रूप को देखकर उन्होंने इस क्षेत्र में धन लगाने का निश्चय किया। इसी कड़ी में लुईस ल्युमिएरे ने 'लि अरोजेर अरोज' नामक पहली फिल्म का निर्माण कर इसे 1895 को प्रदर्शित कर विश्व सिनेमा के क्षेत्र में नई क्रान्ति का सूत्रपात किया। इस फिल्म का फ्रांस के कई शहरों में विधिवत् प्रदर्शन किया गया, जिसे दर्शकों ने टिकट खरीदकर देखा और सराहा था। दर्शकों की इस अद्भुत प्रतिक्रिया को देखकर लुईस ल्युमिएरे और उनके साथी, दोस्तों का उत्साह और अधिक बढ़ता गया और वे इस क्षेत्र में और अधिक धन लगाने लगे। अति उत्साही हो चुके ल्युमिएरे और उनके दोस्तों ने मिलकर छोटी–छोटी कई फिल्म का निर्माण किया और उसे न सिर्फ फ्रांस में बल्कि दुनिया के अन्य देशों में जा–जाकर प्रदर्शित करने में लग गये। इस तरह ल्युमिएरे और उनके साथी ल्यूमिएरे ब्रदर्स के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

''28 दिसम्बर 1895'' विश्व इतिहास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन के रूप में हमेशा याद किया जायेगा। यह दिन विशेष रूप से सिनेमा के प्रमियों के लिए पूरे विश्व में महत्वपूर्ण है इसी दिन पेरिस के ग्रैंडे कैफे हाउस में आमंत्रित मेहमानों के बीच, ल्युमिएरे ब्रदर्स ने पहली बार सिनेमैटोग्राफ'' का प्रदर्शन किया था। वह दिन उस कैफे में बैठे सभी लोगों के लिए एक अत्यन्त रोमांचकारी और आश्चर्य

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

से भरा हुआ ऐतिहासिक दिन था। थोड़ी देर के लिए तो लोगों को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वे आखिर क्या देख रहे हैं? इस तरह चलती–फिरती मूक चलचित्र से विश्व सिनेमा का अविष्कार हुआ।

भारतीय चलचित्र (सिनेमा) का उद्‌भव– सिनेमा फ्रांस की देन है। ल्युमिएरे बन्धुओं ने दुनिया में पहली बार अपना पहला फिल्म शो पेरिस में दिसम्बर 1895 में किया था और उसके केवल छह महीने के बाद ही मनोरंजन की यह नई हवा भारत आ गई। भारत में सिनेमा का प्रवेश 7 जुलाई 1896 में हुआ था। मुम्बई के काला घोड़ा स्थित वाटसन होटल में ल्युमिएरे बंधुओं ने अपनी फिल्मकला का प्रदर्शन किया था। सिनेमा भारत में आया तो इस नई विधा को लेकर यहाँ के कई लोग सक्रिय हो गये। सर्वप्रथम 1910 में एक फिल्म दिखाई गई 'द लाइफ आफ क्राइस्ट' यह फिल्म विदेश से आई और भारत में दिखाई गई। दादा साहब फाल्के ने अपनी जीवन की यह पहली फिल्म देखी। यही वह फिल्म थी जिसने दादा साहब को उस समय की चर्चित कहानी 'राजा हरिशचन्द्र' पर फिल्म बनाने के लिए प्रेरित किया।

इस तरह भारत में सिनेमा का आगमन बहुत पुराना नहीं है अपने सौ साल छोटे से सफर में ही भारतीय सिनेमा कथ्य से तकनीक तक में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। "भारत के विशेष संदर्भ में वह अपनी विशिष्टता के कारण अपना अलग स्थान रखती है, भारतीय संस्कृति, परिवेश में रच–बस कर निखरी इस कला के इस संक्षिप्त इतिहास में विभिन्न पड़ाव आए हैं और अनेक परिवर्तनों से होकर आज हिन्दी सिनेमा ने 'बालीबुड' का नया नामावतरण ग्रहण किया है।"

3 मई 1913 का दिन भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। इसी दिन भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' बनी। "भारतीय सिनेमा की पूर्ण स्वदेशी के रूप में धुंडीराज गोविन्द फालके द्वारा निर्मित फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का नाम भारतीय सिनेमा की पहली मूककथा चलचित्र के रूप में अंकित हो गया।" धुंडीराम गोविन्द फालके उर्फ दादा साहब फालके को भारतीय कथा फिल्मों के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है। राजा हरिश्चन्द्र फिल्म बनाने के पीछे दादा साहब फालके की कड़ी मेहनत थी। अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में उन्होंने इस फिल्म का निर्माण किया था। दादा साहेब ने जब पहली बार सन् 1910 में 'द लाइफ आफ क्राइस्ट' इस फिल्म को देखा तो वे कई दिनों तक इस फिल्म को भूल नहीं पाये। उसी दिन उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर फिल्म बनाने का विचार किया, लेकिन उस समय तक उन्हें फिल्म निर्माण के बारे में कुछ पता नहीं था। वे फिल्म निर्माण का ज्ञान पाने हेतु इंग्लैण्ड चले गये। वहाँ उन्होंने फिल्म निर्माण से सम्बन्धित विधिवत् शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद वे कैमरा और फिल्मोपयोगी समान खरीदकर भारत आये। इसके बाद उन्होंने कथा फिल्म बनाने की तैयारी शुरू की। अब तक उन्होंने श्रीकृष्ण के जीवन कथा पर फिल्म बनाने का इरादा छोड़ दिया था। उन्होंने अपनी पहली फिल्म के लिए एक कहानी और चरित्र को चुना। वह एक धार्मिक कथा थी और चरित्र का नाम था 'राजा हरिश्चन्द्र' इस पर दादा साहेब फालके ने अपने जीवन की प्रथम फिल्म बनाई। "राजा हरिश्चन्द्र" भारतीय सिनेमा की यात्रा का वह पहला कदम था। इस पहले कदम से जो यात्रा शुरू हुई वो देश काल के बदलते स्वरूपों और उतार–चढ़ाव को कई डगमगाते रास्तों पर चलता हुआ, लक्ष्य की सीधी राह पर आज भी अपनी यात्रा में गतिशील है।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी चलचित्र जगत के सफलतम संगीत, भाग–1 एवं 2 (2008), लेखक– लावण्य कीर्ति सिंह, प्रकाशक–कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. भारतीय चलचित्र का इतिहास (1900–1947–2012), लेखक–सीमा जौहरी, प्रकाशक–राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. सिने संगीत का इतिहास (2016), लेखक– स्वामी वाहिद काशमी, प्रकाशक– भारतीय ज्ञानपीठ, दरियागंज, नई दिल्ली।
4. हिन्दी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास (2014), लेखक– दिलचस्प, प्रकाशक– भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली।
5. फिल्म संगीत इतिहास अंक (1998), लेखक– लक्ष्मी नारायण गर्ग, प्रकाशक– संगीत कार्यालय, हाथरस–204101 (उत्तर प्रदेश)।

*****